डीवी के शैक्षिक चिन्तन का मूल्यांकन
(Evaluation of Educational Thought of Dewey)

शिक्षा के क्षेत्र में डीवी ने सचमुच बड़ा कार्य किया है। इन्होंने अपने जीवन की शुरुआत ही अध्यापन कार्य से की थी और 1879 से 1930 तक के लम्बे समय में विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य ही किया था। 1894 में ये शिकागो विश्वविद्यालय में दर्शन विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हुए। यहाँ इन्हें दर्शन के साथ-साथ शिक्षाशास्त्र भी पढ़ाने का अवसर मिला। परिणामतः ये शिक्षा की समस्याओं से परिचित हुए। बस क्या था, ये इन समस्याओं पर सोचने-विचारने लगे, इन पर प्रयोग करने लगे और अपने द्वारा खोजे निर्णयों को लेखबद्ध करने लगे। इन्होंने शिक्षा के विषय में खूब सोचा-विचारा और खूब लिखा। यहाँ डीवी महोदय के शैक्षिक विचारों और उनके शिक्षा जगत पर प्रभाव का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत है।

जॉन डीवी ने एक स्थान पर यह लिखा है कि शिक्षा न तो अपने में साध्य है और न साधन, यह तो मनुष्य के सामाजिक जीवन की एक प्रक्रिया है। इनके अनुसार शिक्षा प्रक्रिया के दो अंग होते हैं—एक मनोवैज्ञानिक और दूसरा सामाजिक। इन्होंने स्पष्ट किया कि मनुष्य समाज में रहकर अपनी जन्मजात शक्तियों के आधार पर जो भी उपयोगी अनुभव करता है, वही वास्तविक शिक्षा है। उनके अपने शब्दों में—'शिक्षा व्यष्टि में उन सब क्षमताओं का विकास है जो उसे अपने पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने और अपनी सम्भावनाओं की पूर्ति करने योग्य बनाए' (Education is the development of all those capacities in the individual which will enable him to control his environment and fulfil his possibilities)।

यदि जॉन डीवी के शिक्षा के सम्प्रत्यय सम्बन्धी विचारों को ध्यानपूर्वक देखा-समझा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि इन्होंने शिक्षा को मनुष्य के जीवन की अभिन्न प्रक्रिया माना है और सामाजिक, गतिशील एवं विकास की प्रक्रिया माना है। आज सभी शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी के इस विचार से सहमत हैं। पर शिक्षा के कार्यों को पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने और सम्भावनाओं की पूर्ति तक सीमित करने के उनके विचार से कोई सहमत नहीं है, शिक्षा तो एक बहुउद्देशीय प्रक्रिया है।

डीवी जीवन को परिवर्तनशील मानते थे। इनका तर्क था कि परिवर्तनशील जीवन के अपरिवर्तनशील उद्देश्य कैसे हो सकते हैं। अतः शिक्षा के भी कोई पूर्व निश्चित उद्देश्य नहीं हो सकते। पर इन्होंने स्वयं शिक्षा के तीन उद्देश्य बताए हैं—अनुभवों का पुनर्निर्माण और समायोजन की क्षमता, सामाजिक कुशलता का विकास और लोकतन्त्रीय जीवन में प्रशिक्षण और इन तीन उद्देश्यों के अन्तर्गत शिक्षा के प्रायः सभी उद्देश्यों—शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास, नैतिक एवं चारित्रिक विकास, व्यावसायिक विकास और लोकतन्त्र की शिक्षा को समाहित किया है। बस मनुष्य के आध्यात्मिक विकास को समाहित नहीं किया है।

डीवी एक ओर तो शिक्षा के कोई उद्देश्य निश्चित नहीं करना चाहते और दूसरी ओर लोकतन्त्र में प्रशिक्षण की बात करते हैं। ये दोनों एकदम विरोधी बाते हैं। हमारी अपनी दृष्टि से किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की शिक्षा के उद्देश्य सुनिश्चित होने चाहिए। सुनिश्चित उद्देश्यों के अभाव में औपचारिक शिक्षा का विधान ही नहीं किया जा सकता। समय के अनुसार इनके स्वरूप में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। वह तो होता रहा है और होता रहेगा। कल संसार के अधिकतर देशों में राजतन्त्र अथवा कुलीनतन्त्र था, तब इसकी शिक्षा दी जाती थी और राज्य के लिए अन्धे राष्ट्रभक्त तैयार किए जाते थे, आज संसार के अधिकतर देशों में लोकतन्त्र प्रणाली है अतः इनमें लोकतन्त्र की शिक्षा दी जाती है और जागरूक राष्ट्रभक्त तैयार किए जाते हैं।

डीवी महोदय ने शिक्षा की पाठ्यचर्या की कोई रूपरेखा तैयार नहीं की। इस सम्बन्ध में भी इनका यही तर्क था कि परिवर्तनशील समाज की शिक्षा की अपरिवर्तनशील पाठ्यचर्या कैसे हो सकती है। परन्तु इन्होंने पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्तों—रुचि का सिद्धान्त, उपयोगिता का सिद्धान्त, क्रियाशीलता का सिद्धान्त, सहसम्बन्ध का सिद्धान्त और लचीलेपन का सिद्धान्त, का विकास अवश्य किया है।

आज किसी भी देश की शिक्षा की पाठ्यचर्या का निर्माण इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर किया जाता है। इस क्षेत्र में हम डीवी महोदय के बहुत ऋणी हैं। परन्तु हमें डीवी की यह बात मान्य नहीं है कि धर्म और

Scanned with CamScanner

नैतिकता की वास्तविक जीवन में कोई उपयोगिता नहीं है इसलिए शिक्षा की पाठ्यचर्या में इन्हें स्थान नहीं देना चाहिए। हमारा अपना अनुभव तो यह है कि धर्म और नैतिकता का पालन करने से मनुष्य का भौतिक जीवन भी सुख और शान्ति से पूर्ण होता है और वह आत्मिक शान्ति भी प्राप्त करता है।

सीखने के सम्बन्ध में डीवी ने कई तथ्य उजागर किए। पहला यह कि सीखने के लिए सामाजिक पर्यावरण आवश्यक है। दूसरा यह कि सीखने की क्रिया तभी प्रारम्भ होती है जब सीखने वाले की सीखने में रुचि हो। तीसरा यह कि बच्चे उसी को सीखने में रुचि लेते हैं जिसका उनके वास्तविक जीवन से सम्बन्ध होता है। चौथा यह कि कोई व्यक्ति तभी सीखता है जब वह सीखने के लिए क्रियाशील हो। और पाँचवाँ यह कि बच्चे किसी भी तथ्य को समग्र रूप से ग्रहण करते हैं। इस दृष्टि से डीवी सबसे अधिक बल सीखने की वास्तविक परिस्थितियों के निर्माण और स्वयं करके स्वयं के अनुभव से सीखने पर देते थे। इनकी दृष्टि से सीखने-सिखाने की प्रयोग विधि ही सबसे उत्तम विधि है, इसमें बच्चों को अवलोकन, क्रिया, स्वानुभव, तर्क, निर्णय और परीक्षण सभी के अवसर मिलते हैं।

डीवी के उपरोक्त शिक्षण सिद्धान्तों के आधार पर इन्हीं के शिष्य किलपैट्रिक ने प्रोजेक्ट विधि का निर्माण किया। डाल्टन आदि शिक्षण की नवीन प्रणालियाँ भी डीवी के शिक्षण सिद्धान्तों पर आधारित हैं। कभी इन शिक्षण विधियों की बड़ी चर्चा रही, परन्तु अब तो उनसे भी अधिक प्रभावशाली शिक्षण विधियों का विकास हो चुका है। पर सीखने के लिए सामाजिक पर्यावरण अर्थात् शिक्षक-शिक्षार्थी के बीच अन्तःक्रिया को सबमें महत्त्व दिया गया है। इस क्षेत्र में डीवी ने सचमुच बड़ा कार्य किया है।

डीवी के अनुसार अनुशासन एक आन्तरिक शक्ति है जो मनुष्य को समाज सम्मत सोचने और व्यवहार करने की ओर प्रवृत्त करती है। इनके अनुसार अनुशासन का उद्देश्य एक ऐसे सामाजिकृत व्यष्टि (Socialized Individual) का निर्माण करना है जो सामाजिक हित में अपना योगदान दे सके। और यह तभी सम्भव है जब व्यष्टि के हृदय में दूसरों के प्रति प्रेम हो, दया हो और त्याग की भावना हो। डीवी ने स्पष्ट किया कि इस प्रकार की भावना का विकास लोकतन्त्रीय पर्यावरण में ही किया जा सकता है, दण्ड के भय से नहीं, दण्ड से तो क्रोध और घृणा के भाव उत्पन्न होते हैं, अनुशासन नहीं।

डीवी की यह बात अनुभव सिद्ध है कि डण्डे के भय से सच्चे अनुशासन की प्राप्ति नहीं हो सकती। इनका यह विचार भी सही है कि अनुशासन एक आन्तरिक भावना अथवा शक्ति है जो मनुष्य को समाज सम्मत आचरण करने की प्रेरणा देती है और इस भावना अथवा शक्ति का विकास सामाजिक क्रियाओं में भाग लेने से स्वयं होता है। प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना से पूर्ण सामाजिक पर्यावरण में अनुशासन स्वयं विकसित होता है, ऐसे पर्यावरण में अनुशासनहीनता का प्रश्न ही नहीं उठता। बच्चों में अनुशासन की भावना अथवा शक्ति के विकास के लिए आज विद्यालयों में ऐसे ही पर्यावरण के निर्माण पर बल दिया जाता है। इस प्रकार विकसित अनुशासन को डीवी ने स्वानुशासन की संज्ञा दी है। यही अनुशासन का सच्चा रूप है।

शिक्षा के क्षेत्र में प्लेटो ने शिक्षक को अधिक महत्त्व दिया है और रूसो ने शिक्षार्थी को परन्तु जॉन डीवी ने शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को समान महत्त्व दिया है। इनके अनुसार शिक्षक का कार्य विद्यालयों में ऐसे पर्यावरण का निर्माण करना है कि बच्चे उसकी क्रियाओं में भाग लेते हुए अपनी समस्याओं का हल स्वयं ढूँढ सकें और उनमें अपने व्यावहारिक जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक क्रियाओं के सम्पादन करने के लिए रुचि और कौशल का विकास हो। ये शिक्षकों को शिक्षार्थियों पर अपने आदर्श थोपने की छूट नहीं देते अपितु उनसे ऐसे पर्यावरण के निर्माण की अपेक्षा करते हैं जिसमें शिक्षार्थी यथा आदर्शों का चयन स्वयं करें।

आज अधिकतर शिक्षाशास्त्री शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को समान महत्त्व देते हैं परन्तु वे डीवी के इस विचार से पूर्णरूप से सहमत नहीं है कि शिक्षक का कार्य केवल ऐसे पर्यावरण का निर्माण करना है जिसकी क्रियाओं में भाग लेकर बच्चे स्वयं के अनुभवों से सीखें। इनका तर्क है कि बच्चे सबकुछ अपने अनुभवों से ही नहीं सीख सकते। फिर हमें दूसरों के अनुभवों का भी लाभ उठाना चाहिए। शिक्षक को आज ये दोनों ही कार्य करने होते हैं।

Scanned with CamScanner

डीवी लोकतन्त्रीय व्यवस्था में विश्वास करते थे। ये एक ओर व्यक्ति के व्यष्टित्व का आदर करते थे और दूसरी ओर उसे सामाजिकृत व्यष्टि बनाने पर बल देते थे। इनका उद्घोष था कि प्रत्येक बच्चे को अपनी उच्चतम योग्यताओं का अधिकतम विकास करने के अवसर प्रदान करने चाहिए जिससे वह अपना और समाज का अधिकतम हित कर सके।

आज संसार में जहाँ भी लोकतन्त्र शासन प्रणाली है वहाँ बच्चों को अपनी रुचि, रुझान और योग्यतानुसार विकास करने के स्वतन्त्र अवसर प्रदान किए जाते हैं परन्तु व्यष्टि और समाज दोनों के हितों को सामने रखकर। यह आज की शिक्षा पर डीवी का प्रत्यक्ष प्रभाव है।

डीवी विद्यालयों को समाज का लघु रूप मानते थे। ये विद्यालयों में समाज के जटिल रूप को नहीं अपितु उसके सरल रूप को उपस्थित करने के पक्ष में थे, ऐसे स्वरूप को जो बच्चों की प्रकृति के अनुकूल हो। ये विद्यालयों को ज्ञान की दूकान के रूप में स्वीकार नहीं करते थे, ये इन्हें एक ऐसी प्रयोगशाला के रूप में देखना चाहते थे जिनमें बच्चे स्वक्रिया एवं स्वानुभव द्वारा स्वयं ज्ञान प्राप्त करें। इनका स्पष्टीकरण था कि विद्यालयों के इस जीवित सामाजिक पर्यावरण में बच्चों में सामाजिक कुशलता का विकास होता है।

विद्यालय और समाज के सम्बन्ध को स्पष्ट करके डीवी ने शिक्षा के क्षेत्र में समाज के सहयोग को बढ़ावा दिया है। इससे शिक्षा के प्रचार और प्रसार में बड़ी सहायता मिली है। परन्तु विद्यालय को समाज का लघु रूप कहकर डीवी ने एक भ्रम पैदा कर दिया है। डीवी के अनुसार विद्यालयों में वास्तविक जीवन की क्रियाएँ होनी चाहिए। परन्तु इस सन्दर्भ में हमें यह कहना है कि यदि जो बाहर है वही विद्यालयों में हुआ तो विकास कैसे होगा! विद्यालयों में तो समाज की वास्तविक स्थिति से आगे एक उच्च अर्थात् आदर्श स्थिति (पर्यावरण) की बात सोचनी चाहिए।

शिक्षा के क्षेत्र से जाति, रंग, लिंग और अर्थ आदि के भेदों को समाप्त करने में डीवी का बड़ा योगदान रहा है। इन्होंने इस बात पर बहुत बल दिया कि सभी बच्चों को अपने विकास के लिए स्वतन्त्र और समान अवसर मिलने चाहिए। इससे सार्वभौमिक शिक्षा को बहुत बढ़ावा मिला और आज प्रायः सभी लोकतन्त्रीय देशों में शिक्षा को सबके लिए सुलभ किया जा रहा है।

डीवी स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं करते थे और दोनों के लिए समान शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने के पक्षधर थे। इनके इस विचार से उस समय पाश्चात्य जगत में स्त्री शिक्षा का बहुत प्रसार हुआ। आज तो पूरा संसार इनके इस मत से सहमत है, हम भारतीय भी।

यूँ डीवी ने व्यावसायिक शिक्षा को अलग से कोई महत्त्व नहीं दिया है, ये इसे सामाजिक कुशलता के अन्तर्गत ही रखते थे, पर इससे व्यावसांयिक शिक्षा के महत्त्व को समझा गया। आज तो ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्र में इतना विकास हुआ है कि अब किसी भी देश में व्यावसायिक शिक्षा का विधान स्वतन्त्र रूप से किया जाता है।

डीवी धार्मिक और नैतिक शिक्षा को अनावश्यक मानते थे। इनका तर्क था कि वास्तविक जीवन में इसकी कोई उपयोगिता नहीं है। इस सन्दर्भ में हम डीवी के विचारों से सहमत नहीं है। पारलौकिक दृष्टि से धर्म और नैतिकता की उपयोगिता के बारे में दावे के साथ भले ही कुछ न कहा जा सकता हो पर लौकिक दृष्टि से धर्म और नैतिकता की उपयोगिता निश्चित रूप से है। धर्म और नैतिकता ही मनुष्य को पशुत्व से मनुष्यत्व की ओर अग्रसर करते हैं, इनसे ही हमारे आचार-विचार को उचित दिशा मिलती है। आज अधिकतर शिक्षाशास्त्री धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा को आवश्यक मानते हैं। पर यह शिक्षा संकीर्ण नहीं होगी, समग्र रूप से मानव हित पर आधारित होगी।

डीवी का प्रभाव

एक दार्शनिक चिन्तक के रूप में डीवी ने रूढ़ि प्रधान समाज के स्थान पर प्रगतिशील समाज के निर्माण में बड़ा योगदान दिया है। डीवी मनुष्य-मनुष्य में भेद नहीं करते थे। ये किसी मनुष्य पर पूर्वनिश्चित आदर्श व मूल्य लादना नहीं चाहते थे, ये उसे अपनी परिस्थितिनुसार स्वयं आदर्श एवं मूल्यों के निर्माण की स्वतन्त्रता देने

Scanned with CamScanner

के पक्ष में थे। इनके इस विचार से पाश्चात्य जगत में धर्मप्रधान संस्कृति के स्थान पर मानव हित प्रधान संस्कृति का निर्माण होना शुरू हुआ और रूढ़िवादी समाज के स्थान पर प्रगतिशील समाज का निर्माण होना शुरू हुआ और यह लहर धीरे-धीरे पूरे संसार में फैल गई।

इस सबके लिए डीवी महोदय ने शिक्षा के क्षेत्र में जो परिवर्तन किए वे भी बड़े महत्त्व के हैं। डीवी से पहले शिक्षा आदर्शोन्मुख अधिक थी, डीवी ने उसे यथार्थोन्मुख किया। रूसो ने शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान किया था, डीवी ने उसे मनोवैज्ञानिक आधार के साथ-साथ सामाजिक आधार प्रदान किया, उसे सामाजिक क्रिया केन्द्रित किया। और सबसे बड़ा उनका कार्य है रूढिवादी शिक्षा के स्थान पर प्रगतिशील शिक्षा की व्यवस्था करना। प्रगतिशील शिक्षा वह शिक्षा है जो नए-नए परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई मनुष्य को निरन्तर प्रगतिशील रखती है। आज जिस देश की शिक्षा गतिशील और प्रगतिशील है इस देश का समाज भी गतिशील और प्रगतिशील है। प्रगतिशील शिक्षा और प्रगतिशील समाज, डीवी की संसार को सबसे बड़ी देन है।

उपसंहार

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि एक दार्शनिक चिन्तक के रूप में डीवी ने रूढ़िप्रधान समाज के स्थान पर प्रगतिशील समाज की स्थापना में बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने शिक्षा को कृत्रिम प्रक्रिया से जीवन की वास्तविक प्रक्रिया में बदल दिया। आज शिक्षा के क्षेत्र में अन्तिम उद्देश्यों की अपेक्षा भौतिक जीवन को सुखमय बनाने की क्रियाओं को अधिक स्थान दिया जाता है। डीवी के इस प्रभाव से शिक्षा हमारे भौतिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर बढ़ी है और हम उस क्षेत्र में विकासोन्मुख भी हैं। परन्तु एक अभाव हमें खटकता है और वह है आध्यात्मिकता का। डीवी महोदय ने मनुष्य के केवल सामाजिक विकास पर बल दिया है, उसके प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक विकास पर नहीं। हमारा अपना तो अनुभव यह है, कि धर्म ही मनुष्य को अन्य जीवों से ऊपर उठाता है श्रेष्ठ बनाता है। शिक्षा के क्षेत्र से इस पक्ष को दूर कर डीवी महोदय ने अपनी अदूरदर्शिता का ही परिचय दिया है। परन्तु कुछ भी हो, एक बात सत्य है और वह यह कि हमारी आज की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त करने में डीवी महोदय का बहुत बड़ा हाथ है। पाश्चात्य जगत में शिक्षा के क्षेत्र में आज से लगभग 2400 वर्ष पूर्व जितना कार्य प्लेटो ने किया था उतना कार्य इस युग में डीवी ने किया है। यदि हम कभी इन दोनों के शिक्षा सम्बन्धी विचारों के योग से भौतिक एवं आध्यात्मिक पक्षों में समन्वय करते हुए एक नई शिक्षा योजना बना सके तो वह दिन हमारे लिए सौभाग्य का दिन होगा, हमें उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए।

परीक्षण प्रश्न

निबन्धात्मक प्रश्न

1. जॉन डीवी के शैक्षिक चिन्तन के बारे में आप क्या जानते हैं ? शिक्षा के अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों के सन्दर्भ में उसकी व्याख्या कीजिए।
2. जॉन डीवी के शैक्षिक विचारों का आज की शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ा है? इस प्रभाव की दृष्टि से डीवी का मूल्यांकन कीजिए।

लघुउत्तरीय प्रश्न

3. शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में डीवी के क्या विचार थे?
4. डीवी द्वारा प्रतिपादित पाठ्यचर्या के निर्माण के सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।
5. डीवी द्वारा निश्चित शिक्षण सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।
6. आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा पर डीवी का क्या प्रभाव पड़ा है?
7. आधुनिक भारतीय शिक्षा डीवी के विचारों से किस रूप में प्रभावित है?

Scanned with CamScanner